# समाजीकरण (Socialization)

जन्म के समय बच्चा न सामाजिक होता है और न ही असामाजिक। धीरे-धीरे वह समाज विशेष की संस्कृति में पलते हुए एक सामाजिक प्राणी बन जाता है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अन्य व्यक्तियों से अन्तःक्रिया करता है और नये-नये अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों के फलस्वरूप बच्चा सामाजिक परंपराओं, नियमों एवं रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करना सीख लेता है। समाज के नियमों को सीखने तथा उसके अनुसार व्यवहार करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है। यो जीवन पर्यन्त चलती रहती है।

Atkinson, Atkinson & Hilgard (1983) के अनुसार - "सामाजिक वातावरण द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवहारों को सुगठित करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।"

Worchel & Cooper (1979) के अनुसार, "वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक व्यक्ति सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण व्यवहारों के भंडार को सीखता है, समाजीकरण कहलाता है।"

समाजीकरण के विभिन्न परिभाषाओं से समाजीकरण के बारे में निम्नांकित तथ्य प्राप्त होते हैं—

→ समाजीकरण के लिए सीखने की प्रक्रिया का होना आवश्यक है। परंतु सिर्फ उन्हीं प्रक्रियाओं तथा व्यवहारों का सीखना समाजीकरण में शामिल किया जाएगा जो सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण, स्वीकार्य एवं सकारात्मक हो तथा अखंड सामाजिक अंतःक्रिया को बनाये रखने में मदद करता है।

→ समाजीकरण सामाजिक मानकों तथा मूल्यों से संबंधित होता है इसलिए इस पर समय एवं स्थान का काफी प्रभाव पड़ता है। चूंकि सामाजिक मानक तथा मूल्यों में समय, परिस्थिति एवं स्थान के अनुरूप परिवर्तन होते रहते हैं। व्यक्ति को भी इन बदलते मानक एवं मूल्यों के अनुसार अपने सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है।

→ समाजीकरण में व्यक्ति द्वारा समाज के सांस्कृतिक मानकों एवं संस्कृति के अन्य तत्वों को आत्मसात भी किया जाता है।

NOTES

Scanned with CamScanner

जिससे व्यक्ति अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं एवं परंपराओं से परिचित हो पाये।

→ समाजीकरण को एक अन्तः क्रियात्मक प्रक्रिया भी माना गया है। इससे व्यक्ति में आत्म या आत्मन का विकास होता है। एवं वह समाज के अन्य लोगों के साथ अंतर्क्रिया करता है, तो इससे उसे दूसरे लोगों के भावों स्वयं को भी समझने का मौका मिलता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि समाजीकरण सामाजिक संरचना की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संसार से प्रभावित होकर अपने आत्म या आत्मन (Self) को उनके मानकों एवं मूल्यों के अनुसार विकसित करता है।